OUKA
The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	हिंदी में संकेत परिवर्तन (code switching) और हिंग्लिश का प्रचलन
Author(s)	Singh, Ved Prakash
Citation	外国語教育のフロンティア. 2022, 5, p. 73-84
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/87568
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

हिंदी में संकेत परिवर्तन (code switching) और हिंग्लिश का प्रचलन

Use of Hinglish and Code Switching in Hindi

SINGH, Ved Prakash

Abstract

In this research paper main focus of the researcher is to show a new type of Hindi style called *Hinglish*. This new style of Hindi language is emerging as a result of social linguistic process Code Switching system. Code Switching is not new in Hindi. Because of it's nature Hindi register has different kind of language sources or vocabulary or words and different kind of styles as well. From the beginning Hindi writers used two, three or more types of vocabulary for writing literature. 14th Century writer *Amir Khusro* used Persian, *Braj* and *Khadiboli* languages in his poetry and other prose writings. Hindi never was a unified language. Its nature from the beginning is diversified language.

From last three decades not only Hindi but all Indian society is changing due to globalization process. Hindi language is also no exception. Hindi speakers using Hindi language with Code Switching or mixing English words or phrases in Hindi. English words are being used for two hundred years. But now not only number of words but ten to fifty percent words are coming from English language. This situation is often seen in cosmopolitan cities like Delhi and Mumbai. In Hindi movies, songs, advertisements and some newspapers people are using *Hinglish* as a new style of Hindi.

So many English words are coming into Hindi apart from this some people are using Roman script for writing Hindi or Hinglish. Some writers are also discussing to change Hindi's *Devanagari* script to Roman script.

Keywords: Code Switching, Hindi, English, Hinglish,

एक प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म '3 इडियट्स' का एक चर्चित वाक्य है- "जहाँपनाह तुस्सी ग्रेट हो।"[1] इस एक वाक्य में ही फारसी भाषा का 'जहाँपनाह', पंजाबी भाषा का शब्द 'तुस्सी', अंग्रेजी का 'ग्रेट' और हिन्दी की सहायक क्रिया 'हो' का प्रयोग किया गया है। चार शब्दों में चार भाषाओं के शब्द मौजूद हैं। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। इसका असर भारतीय संस्कृति के हर हिस्से पर कमोबेश जरूर देखा जा सकता है। भारत के लोगों की भाषाओं पर भी यह प्रभाव पड़ा है। भारत के किसी भी क्षेत्र या व्यक्ति की भाषा में किसी एक ही भाषा के शब्दों का प्रयोग नहीं होता है। जाने-अनजाने वह एकाधिक भाषाओं के शब्दों या वाक्यों का प्रयोग कर जाता है। इस संबंध में प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने लिखा है- "India has been for several millennia a multilingual and poly-cultural country. There is not a single state in the country which is completely uni-lingual, not a single major modern Indian language whose speakers do not employ at least three contact languages, and not a single speech-community which has less than at least three distinct linguistic codes in its verbal repertoire."[2]

इस बहुभाषिक देश में हिन्दी में भी इसीलिए अनेकरूपता दिखाई देती है। वर्तमान समय में हिन्दी में एक शैली बेहद लोकप्रिय हो रही है। इससे हिंदी का वर्तमान स्वरूप भी काफी कुछ बदल रहा है। हिंदी की इस नई शैली में अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों का अभूतपूर्व प्रयोग हो रहा है। इस नई शैली की हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का आगमन पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा हो रहा है। इस समय हिंदी बोलने वाले अधिकतर लोग जाने-अनजाने हिंदी में कोड स्विचिंग/संकेत परिवर्तन/हिंग्लिश का प्रयोग पहले से बहुत अधिक कर रहे हैं।[3] यह प्रवृति नई नहीं है लेकिन बीते तीस सालों में यह प्रवृति काफी बढ़ गई है। हिंदी वाक्यों में अंग्रेजी शब्दों को मिलाने की प्रवृत्ति भारतेन्दुकालीन साहित्यकारों में भी दिखलाई पड़ जाती है। आगे चलकर ऐसे अनेक शब्द विदेशज शब्दों की श्रेणी में आकर हिंदी शब्दों के सागर में समा जाते हैं। लेकिन इस समय हिंदी में अंग्रेजी शब्दों की बहुत बड़ी मात्रा अंग्रेजी से बहकर आ रही है। बोलने के स्तर पर अब अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ वाक्यांश या कभी-कभी पूरे या कई-कई वाक्य भी हिंदी के साथ प्रयुक्त होने लगे हैं। हिंदी की इसी नई शैली के बारे में इस लेख में कुछ विचार किया जाएगा। समाज-भाषा विज्ञान में इसे संकेत-परिवर्तन या कोड स्विचिंग कहा जाता है। सबसे पहले हमें जानना चाहिए कि कोड स्विचिंग किसे कहते हैं? पहले इसे समझ लेते हैं। जब हम किसी एक भाषा को बोलते हुए किसी अन्य भाषा के शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों का प्रयोग करते हैं तो उसे कोड स्विचिंग कहते हैं। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार एक भाषा व्यवस्था या बोली से दूसरी भाषा व्यवस्था या बोली में जाना कोड स्विचिंग कहलाता है।[4] हिंग्लिश और कोड स्विचिंग को परिभाषित करते हुए रोहित प्रकाश ने लिखा है-

"हिंग्लिश से मेरा अभिप्राय वह भाषा-प्रयोग है जो हिन्दी तो है, लेकिन अंग्रेजी के शब्दों का उसमें अबाध रूप से प्रयोग होता है। कभी-कभी अंग्रेजी के समूचे वाक्य तक उस भाषा-प्रयोग में शामिल हो जाते हैं।...भाषाविज्ञानी संकेत-मिश्रण(कोड-मिक्सिंग) और संकेत-परिवर्तन (कोड-स्विचिंग) जैसी पारिभाषिक शब्दावलियों के जरिए इस प्रक्रिया की व्याख्या करते हैं।"[5]

हिंदी भाषा बोलने वाला समाज आसपास की दूसरी भारतीय भाषाओं या बोलियों के अलावा अरबी-फारसी और अब अंग्रेजी का इस्तेमाल करता रहा है। कभी-कभी हिंदी के साथ दूसरी भाषा का प्रयोग बहुत अधिक भी देखा गया है। आदिकाल का साहित्य पढ़ते हुए अमीर खुसरो की एक ग़ज़ल हिंदी साहित्य के इतिहास लेखकों ने प्राय: उद्धृत की है। इस ग़ज़ल की एक पंक्ति फारसी भाषा की है तो दूसरी पंक्ति ब्रज भाषा की है। "जे हाल मिसकी मकुन तगाफुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ। कि ताबे हिज्राँ न दारम, ऐ जाँ! न लेहु काहें लगाय छतियाँ।। शबाने हिज्राँ दराज चूँ जुल्फ व रोजे वसलत चूँ उम्र कोतह। सखी ! पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ!।।"[6]

अमीर खुसरो की यह ग़ज़ल सन् 1283 से सन् 1324 के बीच की है। इस तरह से देखें तो हिंदी या ब्रज, अवधी या अन्य भाषाओं के साथ दूसरी भाषाओं के शब्दों या वाक्यों का इस्तेमाल हिंदी में सात सौ से वर्ष से भी पुराना है। भारतीय समाज में इस प्रवृत्ति के और प्राचीन उदाहरण भी मिल सकते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है भारतीय समाज और विशेष रूप से हिंदी कहे जाने वाले क्षेत्र की द्विभाषिक/बहुभाषिक संस्कृति। दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण है सदा से सत्ता या केंद्र की भाषा का बहुसंख्यक जनता की भाषा से भिन्न होना। इसलिए प्राय: सत्ता की भाषा अलग और जन भाषा अलग रही है। ब्रज के साथ फ़ारसी का मेल भी इसी का संकेत है।

जो स्थिति पहले ब्रज और फारसी के साथ आपने देखी, वही स्थिति हिंदी की अंग्रेजी के साथ बहुत बड़ी मात्रा में मिलती है। इसे कोड स्विचिंग कहते हैं, इसको लेकर भाषा की शुद्धता रखने वाले समुदाय का भाव नकारात्मक रहा है। वहीं जब हम भाषा के विकास को समझते हैं तो पाते हैं कि यह सामाजिक-आर्थिक कारणों से हो रहा है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने 1873 में एक

पत्रिका निकाली थी, जिसका नाम पहले उन्होंने 'हरिश्चन्द्रमैगज़ीन' रखा था। मैगज़ीन शब्द अंग्रेजी का है। आठ अंकों के बाद इसका नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्रचन्द्रिका' कर दिया।[7] हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भारतेंदु मंडल के रचनाकार उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के यहाँ भी दिखता है। न्यायालय या कचहरी के लिए 'कोर्ट' शब्द का प्रयोग उन्होंने किया। लेकिन मजेदार है कि संवाद के लिए अंग्रेजी शब्द 'स्पीच' का बहुवचन बनाते हुए उन्होंने 'स्पीचें' शब्द निर्मित किया। दो उदाहरण देखें- "दिव्यदेवी श्री महाराणी बड़हर लाख झंझट झेल और चिरकाल पर्यन्त बड़े बड़े उद्योग और मेल से दुःख के दिन सकेल, अचल 'कोर्ट' का पहाड़ धकेल फिर गद्दी पर बैठ गई।"[8] अंग्रेजी शब्द को हिन्दी व्याकरण की प्रकृति के अनुसार तद्धित प्रत्यय 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हुए हुए प्रेमघन जी ने 'स्पीच' से 'स्पीचें' शब्द गढ़ लिया। उन्होंने लिखा है- "गर्जे कि इस सफहे की कुल स्पीचें 'मर्चेंट आफ वेनिस' से ली गईं।"[9]

आज़ादी के बाद हिंदी को 14 सितम्बर सन् 1949 में राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन अंग्रेजी को सहायता के लिए अगले दस साल और फिर अनिश्चित समय के लिए रख लिया गया। वह राजकाज की दूसरी भाषा से कालान्तर में प्रमुख भाषा बन गई। 1990 के बाद भूमंडलीकरण की प्रक्रिया और नवीन संचार साधनों के कारण हिंदी ही नहीं विश्व की सभी भाषाओँ में अंग्रेजी के शब्द या उपवाक्य या कभी-कभी पूरे वाक्य तक आने लगे हैं। हिंदी में इस प्रक्रिया के लिए हिंग्लिश जैसा शब्द भी प्रचलन में आ गया है। इस कोड स्विचिंग की नई भाषा को हिंग्लिश कहकर उसकी पहचान और आलोचना दोनों हो रही है। हिंग्लिश की परिभाषा देते हुए कैम्ब्रिज डिक्शनरी में बताया गया है कि हिंदी और इंग्लिश का मिश्रण ही हिंग्लिश है, विशेषतः वह अंग्रेजी जो हिंदी बोलने वाले बोलते हैं।[10] फ्रंचेस्का ओर्सीनी ने कोड स्विचिंग और हिंग्लिश के बारे में लिखा है कि यह हिन्दी और इंग्लिश को आपस में बाँधने वाली परिघटना है- "भारत में आम बोलचाल में हिन्दी और अंग्रेजी की बीच संकेत-परिवर्तन और संकेत मिश्रण या तो अंग्रेजी के साँचे के भीतर होता है या फिर हिन्दी के। लेकिन भारतीय तर्ज की अंग्रेजी और साथ ही देवनागरी लिपि में लिखी अंग्रेजी या रोमन लिपि में लिखी हिन्दी में भी यह होता है।"[11]

भारत में हिन्दी के बदलने से पहले शहरी समाज बदलने लगा था। उस शहरी समाज के भूमंडलीकृत होने से उसमें हिन्दी के साथ अंग्रेजी के शब्द और वाक्य भी बहुत आने लगे। इस नए भाषा-रूप का इस्तेमाल युवा ही अधिकतर कर रहे हैं। इसे उनके आत्मविश्वास के साथ जोड़कर देखते हुए फ्रंचेस्का ओर्सीनी लिखती हैं- "इस तरह, हिंग्लिश को न सिर्फ शहरी, कॉस्मोपॉलिटन युवा-संस्कृति की बल्कि एक नये, उद्योगशील और आत्मविश्वासी भारत की भी भाषा बताया जाता है...।"[12]

इस नए युवा वर्ग के आत्मविश्वास और अंग्रेजी भाषा को हिन्दी के साथ प्रयोग करते हुए हिन्दी में साहित्य भी लिखा जा रहा है। हालांकि साहित्य में फिल्म, समाचार पत्रों, एफ.एम. की तुलना में हिंग्लिश का चलन अभी कम है। पंकज मित्र की कहानी जिसका शीर्षक भी अंग्रेजी में है-'क्विज मास्टर'। इस कहानी से कुछ वाक्य आप पढ़िए- "अपना एकमात्र सूट पहनकर एकमात्र टाई लगाए- 'ए वेरी गुड इवनिंग टु यू लेडिज एंड जेन्टलमैन...' फ़र्राटेदार अंग्रेजी, चुस्त-दुरुस्त उच्चारण...वर्षों के अभ्यास से बनाई हुई, सीधी गई...और 'क्विज मास्टर्स डिसीजन इज फाइनल' तक आते-आते तो गर्दन उसकी तनकर अकड़ जाती थी। लोगों की तालियों के बीच उसे लगे लगता कि बस उसकी बात ही 'आखिरी बात' है।"[13] इस तरह की हिंदी आजकल साहित्य में लिखी जाने लगी है। शहरों और कस्बों में बदलती हुई हिंदी को साहित्य में भी कुछ हद तक लिखा जा रहा है। इसे आप कोड स्विचिंग और हिंग्लिश दोनों की कह सकते हैं।

उदारीकरण की प्रक्रिया ने हिंदी समाज को पश्चिमी दुनिया और अनेक रूपों में अंग्रेजी के नजदीक ला दिया। मनोरंजन के साधनों के साथ भाषा में यह परिवर्तन सामान्य रूप से दिखने लगा। नब्बे के दशक में ही विज्ञापनों में हिन्दी के साथ अंग्रेजी के कुछ शब्द आने लगते हैं। समाज में बड़े समुदाय ने इन विज्ञापनों को अपनी भाषा और व्यवहार में शामिल कर लिया। 1998 में सामने आया 'ये दिल माँगे more' जैसा विज्ञापन देखते-देखते सामान्य जन के मुँह से निकलने लगा। "टीवी विज्ञापनों की भाषा वैविध्यपूर्ण है। उत्पादक अपनी वस्तु की बिक्री हेतु आकर्षक विज्ञापनों का सहारा लेता है। दो भाषाओँ को मिलाकर एक नया फिकरा गढ़ने की तकनीक-....ये दिल मांगे मोर, आम की रसीली गोली/एन्जॉय वेरी स्लोली"[14] अब पहले की तुलना में हिन्दी में अंग्रेजी का मिश्रण कहीं ज्यादा तेज गति से होने लगा। इस संबंध में फ्रंचेस्का ओर्सीनी लिखती हैं- "तुलनात्मक रूप से देखें तो 1990 के दशक यानी उदारीकरण के दौर के बाद से एक नई सहिष्णुता नजर आती है। इसके तहत ढेर सारे वैसे संदर्भों–जैसे टीवी के समाचार, अखबार, विज्ञापन, हिन्दी फिल्मों के संवाद और गीत आदि जहाँ भाषाई मिश्रण की अनुमति नहीं दी जाती थी वहाँ वस्तुतः विविध भाव-भंग से, जिनका जिक्र ऊपर किया गया है, हिंग्लिश को वरीयता दी जाने लगी है।"[15]

जब जनता की भाषा में अंग्रेजी के शब्द बहुत तेज गति से आने लगे तो शासन की आधिकारिक और तत्समनिष्ठ हिन्दी में भी परिवर्तन आने लगा। जिस भाषा को शहरी जनता और मनोरंजन माध्यम पूरे दिन बोल रहे हों, उसे सरकार भी अपनाने लगती है। इस स्थिति के परिणामस्वरूप सन् 2011 में भारत सरकार ने अपने आदेशों की भाषा में भी सहज-सामान्य प्रचलित अंग्रेजी शब्द शामिल करने संबंधी आदेश पारित किया। इस पर कुछ विवाद भी हुआ। लेकिन अब यह सामान्य नियम जैसा बन गया है।[16]

इस समय जो हिन्दी बोली जा रही है और उसमें अंग्रेजी के शब्दों को शामिल करने की स्थिति है, वह व्यक्ति और उसकी आर्थिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि पर निर्भर है। ग्रामीण समाज का युवा भी अपनी क्षमता के अनुसार हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों को शामिल कर रहा है और शहरों में रहने वाले अंग्रेजी स्कूलों में पढ़े हुए युवा भी ऐसी भाषा बोल रहे हैं। लेकिन दोनों तरह के युवाओं की हिंग्लिश में फर्क है। इस नई तरह की भाषा-शैली में भी सामाजिक भेद देखा जा सकता है- “अगर हिंग्लिश की सफलता के पीछे एक वजह यह गिनायी जाती है कि यह बाधाएँ तोड़ती और संवाद-संचार को संभव बनाती है तो दूसरी तरफ यह बात भी है कि हिंग्लिश बोलने वाला जिस सामाजिक-वर्ग का होता है उसकी छाप भी इस भाषा पर होती है और इस अर्थ में हिंग्लिश अब भी बड़ी सूक्ष्म रीति से अपने बोले जाने के लहजे, बलाघात और शब्दों के चयन आदि के हिसाब से सामाजिक ऊँच-नीच की सूचना देती है।”[17] शहरी युवाओं को अंग्रेजी की ओर मुड़ते देखकर या कहें इस नई शैली की हिन्दी बोलते देखकर कुछ अखबार भी इस नई तरह की हिन्दी का इस्तेमाल करने लगे हैं। नवभारत टाइम्स इस मामले में सबसे आगे और अलग दिखाई देता है- “टाइम्स ऑफ इण्डिया के राहुल कंसल बताते हैं कि हमने, ‘अपने संपादकों को कहा कि अंग्रेजी के जितने शब्दों का प्रयोग पाठक करते हैं आप उतने शब्दों का प्रयोग कीजिए–और इससे मदद मिली।”[18] लेकिन एक बात और यहाँ दिखाई देती है कि अख़बार में इस तरह की भाषा में कोई एकरूपता नहीं है। वह कभी ज्यादा हिंग्लिश तो कभी कम हिंग्लिश है। साथ ही खबर के विषय और पत्रकार की पृष्ठभूमि के अनुसार हिंदी में अंग्रेजी शब्दों की मिलावट कम या अधिक देखी जा सकती है। दिल्ली और मुंबई के शहरी युवाओं की भाषा में कितने प्रतिशत शब्द अंग्रेजी के आ रहे हैं? इस पर कोई शोध देखने में नहीं आया है। लेकिन नवभारत टाइम्स जैसे अखबार में कई बार पचास प्रतिशत के आसपास हिंदी में अग्रेजी शब्दों की उपस्थिति देखने को मिलती है।

“शायद नवभारत टाइम्स इसी हिंग्लिश को गढ़ना चाहता है जिससे शहरी मध्यवर्ग जुड़ सके। लेकिन इस प्रयास में वह कभी ज्यादा और कभी कम के दो ठिकानों के बीच झूलता रहता है। क्योंकि नीति तो है, लेकिन समान रूप से प्रशिक्षित कार्यपालक नहीं हैं। भाषा की एकरूपता की कोई गंभीर कोशिश भी नहीं दिखती।”[19] युवाओं को अपने अख़बार से जोड़ने के अलावा एक नई प्रकार की हिंदी को लिखित में मान्यता दिलाने का काम भी इस अख़बार ने सबसे ज्यादा किया है।

इस प्रक्रिया के कारण ‘आईनेक्स्ट’ जैसे छोटे अखबार भी सामने आए हैं जो इसी तरह की हिंदी इस्तेमाल करते हैं, जिसे लोकप्रिय रूप में हिंग्लिश कहा जा रहा है। “भारत सरकार के टेलीविज़न दूरदर्शन की भयाक्रांत करने वाली शुद्ध हिन्दी, जिसका बीते वक्त में यह कह कर मज़ाक बना था कि उसे हिन्दी में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने वाले के सिवाय कोई नहीं समझता, अब खुद दूरदर्शन पर भी अतीत की बात बन चुकी है। ‘समाचार पत्रों की क्रांति’ का एक हिस्सा टेब्लॉइड न्यूज़ सप्लीमेंट्स की बढ़ोतरी से जुड़ा है जिसमें बॉलीवुड और टेलीविज़नी पर्दे के सितारों की ज़ोरदार कवरेज होती है। इसमें तर्जे-बयाँ के रूप में फिल्मी गॉसिप के उस पुराने रूप को अपना लिया गया है जिसने हिंग्लिश की राह खोली। हिंग्लिश अखबार आईनेक्स्ट जैसे प्रयोग भी हुए हैं जो कि मूलतः हिन्दी का अखबार है लेकिन उसमें बहुत सारे अंग्रेजी के शीर्षक देवनागरी या रोमन लिपि में लिखे होते हैं।”[20] इन नई बन रही हिंदी में देवनागरी की जगह रोमन का भी खूब इस्तेमाल किया जा रहा है। अनेक लोग इस नई लिपि में धीरे-धीरे सहज भी होते जा रहे हैं।

फ़िल्मी दुनिया में फिल्म की स्क्रिप्ट प्रायः रोमन में ही लिखी जाने लगी है। यह चलन कब से शुरू हुआ? इस बारे में कोई प्रामाणित जानकारी तो नहीं मिली है लेकिन फ़िल्मी दृश्यों में भी दिखाई जाने वाली हिंदी में अनेक बार रोमन लिपि में लिखी हिंदी हम देख सकते हैं। उदाहरण के रूप में ‘3 इडियट्स’ फिल्म में चतुर रामालिंगम नामक विद्यार्थी शुद्ध हिंदी में अपने लिए भाषण लिब्रेरियन दुबे से लिखवाता है, लेकिन उस पन्ने पर रोमन में ही भाषण[21] लिखा हुआ दिखाई देता है।

हिंग्लिश के कारण ठीक से अंग्रेजी न बोल पाने वाला हिंदी भाषी युवा वर्ग अपने को अंग्रेजी भाषा के थोड़ा करीब पहुँचा हुआ भी पाता है। इसमें वह खुद को अपने हिंदी भाषी समाज से आगे बढ़ा हुआ भी देखता है। इसलिए हिंग्लिश का प्रयोग ऐसे युवा भी करते हैं, जो अंग्रेजी बोलने में पूरी तरह से निपुण नहीं हो पाए हैं- “हाँ, यह बात सच है कि जो अच्छी अंग्रेजी बोल लेते हैं और जो अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल पाते उनके बीच एक निश्चित भेद है। बाहर के ज्यादातर छात्र भाषा को लेकर सहज नहीं हैं और

जो इस कारण कटा हुआ महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि इसी वजह से अंग्रेजी का 'भारतकृत' संस्करण इतना लोकप्रिय हुआ है। इसने चीजों को ज्यादा अनौपचारिक बनाने में मदद की है और सामान्य तौर पर हर व्यक्ति को इसके लोकप्रिय होने का कारण उसका 'कमसिन' भाषा होना है। इसमें एक खिलंदड़ाना आवेग है। कॉलेज में हम लोगों में कोई भी समुचित हिन्दी या अंग्रेजी में नहीं बोलता, हम हमेशा हिंग्लिश बोलना ही पसंद करते हैं और क्यों न करें? यह सबसे ज्यादा रचनात्मक और लचीली भाषाओं में एक है। हम रोज एक नया शब्द गढ़ लेते हैं और इसमें बहुत मज़ा आता है', चंडीगढ़ के छात्र रमनदीप सिंह ने हँसते हुए बताया।"[22] कुछ विद्वानों के हिंग्लिश को एक संकर भाषा भी कहा है। जो वर्तमान समाज के यथार्थ को व्यक्त कर रही है- "अमिताभ भट्टाचार्य भाषा के रूप में हिंग्लिश को लेकर बहुत गंभीर हैं और इसका बहुत सम्मान करते हैं। उनकी नजर में हिंग्लिश हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों को आमने-सामने टकराकर हँसी पैदा करने का माध्यम नहीं बल्कि समकालीन यथार्थ को धारण करने वाली एक संकर भाषा है...।"[23] समाज में हिंग्लिश के व्यवहार के बाद इसे 2009 में अकादमिक समाज से भी मान्यता मिलने लगी।

इस विषय पर किताब सम्पादित होने लगी और कार्यक्रम भी होने लगे। इस तरह का ऐसा अकादमिक सेमिनार रुपर्ट स्नेल ने मुंबई में आयोजित किया और फिर उन्होंने इस नई बन रही भाषा पर 'चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फेनोमेनन ऑफ हिंग्लिश' नामक किताब भी लिखी- "2009, जनवरी में रुपर्ट स्नेल ने हिंग्लिश को लेकर उठ रहे विभिन्न सवालों और संदर्भों को ध्यान में रखते हुए मुंबई में सेमीनार आयोजित किया। इसमें अकादमिक दुनिया से लेकर सिनेमा, विज्ञापन, टेलीविज़न जैसे अलग-अलग क्षेत्रों के लोग शामिल हुए, बाद में 2011 में उन्होंने रीता कोठारी के साथ मिल कर 'चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फेनोमेनन ऑफ हिंग्लिश' नाम से पुस्तक का सम्पादन किया, यह हिंग्लिश को लेकर पहली किताब है जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों में इस्तेमाल की जाने वाली हिंग्लिश, उसके पीछे की रणनीति और संदर्भ पर विस्तार से चर्चा की गई है।"[24] अब हिंग्लिश को तकनीक के क्षेत्र में भी मान्यता मिलने लगी है। अभी हिंग्लिश हिंदी में एक नई शैली या रूप भर ही है। लेकिन इस मान्यता में इसे स्वतंत्र भाषा की ओर ले जाने का संकेत भी है- "इधर तकनीकी स्तर पर एपल-मैक ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम आइओएस-9 में बाकी सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ हिंग्लिश के लिए अगल से की-बोर्ड की व्यवस्था की है। यानी व्याकरण और भाषा-विज्ञान के स्तर पर निर्धारण से पहले वैश्विक स्तर पर इसने कम्प्यूटिंग व्यवस्था के तहत हिंग्लिश को एक स्वतंत्र भाषा का दर्जा दे दिया है।"[25] बाज़ार के स्तर पर इसे पहले मान्यता मिलना इस बात का संकेत है कि हिंग्लिश एक बाज़ार-प्रिय भाषा भी बनकर उभरी है।

पुराने आकाशवाणी की भाषा की अपनी पहचान है। नए एफएम चैनलों ने अपनी भाषा को पूरी तरह से हिंग्लिश के रूप में ढाल लिया है। वहाँ कार्यक्रम का संयोजन करने वाले रेडियो जोकी (आर जे) अपनी भाषा में हिंदी के साथ अंग्रेजी के बहुत सारे नए और पुराने प्रचलित शब्दों को आराम से ले आते हैं -"एफ़एम चैनलों की भाषा पर चर्चा करते हुए 'रेडियो मिर्ची सुनने वाले ऑल्वेज़ खुश' को एक उदाहरण के तौर पर पेश किया जाता रहा है। इसका एक मतलब यह भी निकलता है कि नब्बे के दशक की आखिर तक आते-आते माध्यम के तौर पर रेडियो के तेज़ी से खात्मे की एक वजह उसकी भाषा भी रही है।"[26] इस नई बन रही भाषा को अनेक लोग आकर्षक और अधिक सम्प्रेषणीय मानने लगे हैं-"हिन्दी में अंग्रेजी की मिलावट से बनी हिंग्लिश के कारण एक माध्यम के तौर पर रेडियो की भाषा पहले से कहीं अधिक आकर्षक, श्रोताओं के मिजाज़ के अनुरूप और संप्रेषणीय हुई।"[27]

हिंदी का श्रोता समाज एक जैसा नहीं है इसलिए यह बात दावे के साथ नहीं कही जा सकती है कि हिंग्लिश के कारण हिंदी पहले की तुलना में अधिक संप्रेषणीय हुई है। इस बात को दूसरे ढंग से कहते हुए गीतकार प्रसून जोशी हिंग्लिश को हिंदी संकट के समय प्रयुक्त की गई कोशिश के रूप में देखते हैं-"प्रसून जोशी मानते हैं कि हिंग्लिश व्याकरण या भाषाई शुद्धता से कहीं ज्यादा खुद को बचाए रखने का मसला है। व्यक्ति किसी भी हाल में अपनी बात लोगों के बीच रखना चाहता है और ऐसे में हिंग्लिश के साथ 'लैंग्वेज ऑफ सर्वाइवल' का सवाल ज्यादा महत्त्वपूर्ण बन जाता है।"[28]

हिंदी बोलने और समझने वाला समाज बहुत बड़ा है। और उस पर कोई संकट प्रत्यक्षत: दिखाई नहीं देता है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि हिंग्लिश का प्रयोग हिंदी के 'लैंग्वेज ऑफ़ सर्वाइवल' बन गया है। और न ही इसे 'मरता क्या न करता' के रूप में देखा जा सकता है। जैसा कि रुपर्ट स्नेल ने कहा है-"यह भाषा 'मरता क्या न करता' की है। चूँकि लोगों को किसी न किसी प्रकार एक-दूसरे से अपनी बात कहनी पड़ती है, इसलिए उन्होंने इसे बना डाला। मैं जो फर्क करता हूँ वह ये है: किसी के लिए यह मजे के लिए है तो किसी के लिए यह मजबूरी का नाम है। रीता कोठारी और रुपर्ट स्नेल (2011) : 194"[29] यह मूल

रूप से दो भाषाओं का बहुत नजदीक आना और एक नए रूप को निर्मित करने का प्रयास है। इसलिए दोनों भाषाएँ अपनी शब्दावली और रूप को कुछ बदल रही हैं।

एक ही वाक्य में दो-तीन या चार भाषाओं के प्रयोग का उदाहरण नया नहीं है। इसे भाषाओं का आपसी लेन-देन कह सकते हैं। इसे वैयाकरणाचार्यों ने भी गलत नहीं माना है। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने हिंदी में बांगला आदि भाषाओं के शब्दों के आने को बुरा नहीं अपितु इसे अच्छा संकेत माना और कहा कि अभी हिंदी अपनी आसपास की बहनों से मिल रही है और फिर वह विदेशी भाषाओं से भी कई बातें सीखेगी और शब्द ग्रहण करेगी[30] - "प्रसून जोशी रंग दे बसंती के गीत 'मस्ती की पाठशाला' की पंक्ति 'टल्ली होकर गिरने से, समझी हमने ग्रैविटी' का उदाहरण देते हुए दावा करते हैं कि इसमें एक ही साथ अंग्रेजी, पंजाबी और हिन्दी के शब्द शामिल हैं। भाषा के इस रूप पर उन्हें गर्व है...।"[31] भाषा का यह रूप कई लोगों के लिए गर्व करने और कई लोगों के लिए आपत्ति करने की स्थिति लेकर सामने आया है। 'टल्ली होकर गिरने से, समझी हमने ग्रैविटी' भाषा का यह रूप भारत की बहुभाषिकता की ओर भी संकेत करता है।

यह निश्चित बात है कि नए संचार और मनोरंजन उद्योग ने हिंग्लिश को एक छोटे दायरे से उठाकर बड़े समाज का सच बना दिया है-"हिंग्लिश और युवा/ कैम्पस की भाषा पर बात करते हुए सिद्धार्थ मिश्रा और सौमिक पल इस बात पर समान रूप से सहमत हैं कि हिंग्लिश के विस्तार में टेलीविज़न और उन पर प्रसारित कार्यक्रमों और खासकर विज्ञापनों की बड़ी भूमिका रही है। इसके पहले हिंग्लिश के इस तरह से युवाओं के बीच प्रयोग नहीं हुए। इस क्रम में दोनों 'यंगिस्तान' से लेकर 'यही है राइट चॉइस बेबी' के युवाओं की बोलचाल पर पड़ने वाले असर की विस्तार से चर्चा करते हैं।"[32] इस नई भाषा को नौजवान पीढ़ी की भाषा मानकर इसे यंगिस्तान की भाषा भी कहा जाने लगा है। यह देखा जा रहा है कि भारत की युवा पीढ़ी इस भाषा का इस्तेमाल अधिक से अधिक कर रही है।

आज से पन्द्रह साल के पहले की वास्तविकता अलग थी और आज से सात-आठ साल और आज की स्थिति एक जैसी नहीं है। भाषा और उसे बोलने वाला समाज बड़ी तेजी से बदल रहा है। यह बदलाव उन साधनों से ज्यादा हो रहा है जिससे हिंदी भाषी समाज बहुत ज्यादा जुड़ा हुआ है। अब हिंदी में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा है- "2004-05 तक हिन्दी वाक्यों के बीच अंग्रेजी के शब्द-भर प्रयोग किए जाते रहे। 2012-13 तक आते-आते लगातार तीन-तीन, चार-चार वाक्य हिन्दी शब्दों के प्रयोग के साथ अंग्रेजी में बोले जाने लगे।"[33] हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों और उपवाक्यों का प्रयोग समय के साथ आगे ही बढ़ता जा रहा है।

एफ़एम चैनलों ने हिंदी के नए गानों के साथ जो भाषा अपने प्रस्तुतिकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल करवाई है, वह हिंग्लिश ही है। ऐसा करने का उन पर बाज़ार की ओर से दवाब भी बनाया गया। पहले उन्होंने शब्दावली से कोड मिक्सिंग की शुरुआत की। फिर अंग्रेजी के उपवाक्यों तक का आसानी से इस्तेमाल किया जाने लगा है- "एफ़एम चैनलों के संदर्भ में हिंग्लिश के प्रयोग को लेकर फिलहाल इतना तो स्पष्ट है कि प्राथमिक तौर पर चैनल जिस शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं, अंग्रेजी की जो कोड-मिक्सिंग और कोड-स्विचिंग करते हैं, वह या तो व्यावसायिक गतिविधियों, किसी व्यावसायिक संधि या प्रायोजक की इच्छा पर आधारित है या फिर कई ऐसे क्षेत्र हैं जो इसके प्रदाता हैं।"[34] कई बार ऐसा भी लगता है कि मनोरंजन जगत से जुड़ी कम्पनियाँ भाषा के इस प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ाने पर बल दे रही हैं।

नवभारत टाइम्स की हिंदी में अंग्रेजी के बहुत सारे शब्दों को मिलाने के कारण उसकी भाषा अब हिंग्लिश हो गई है। नवभारत टाइम्स को अब विद्वान् हिंग्लिश का प्रतिनिधि अख़बार भी कहने लगे हैं।[35] कुछ विद्वान मानते हैं कि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की कम योग्यता कारण हिंग्लिश का चलन बढ़ रहा है-"भाषा को लेकर जो शुद्धतावादी आग्रह है, वह भाषाई 'ज्ञान' के दावे से उपजा है। इस नजरिये से देखने पर विद्वानों के एक समूह की यह मान्यता स्वाभाविक लगती है कि इस ज्ञान का अभाव ही हिंग्लिश के उभार की वजह है।"[36] संचार के साधनों के साथ युवा वर्ग के जीवन से ज्यादा जुड़े विषयों की भाषा हिंग्लिश होने लगी है-"निश्चित तौर पर टीवी, इंटरनेट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग आदि ने हिंग्लिश के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया है। इनकी देखा-देखी अख़बारों और पत्रिकाओं ने भी यह राह पकड़ ली है। मनोरंजन, खेल, व्यापार आदि से जुड़ी खबरों की भाषा तो अनिवार्य रूप से हिंग्लिश हो गई है।"[37] शहर में आने वाले युवा वर्ग भी इसी भाषा को अपनाने और इस्तेमाल करने लगते हैं। इसलिए भी शहरों में हिंग्लिश का चलन काफी बढ़ रहा है-"छोटे शहरों के बारहवीं-बीए पास युवा जब नौकरी की तलाश में बड़े शहरों में दाखिल होते हैं, तो इनके जीवन और काम की स्वाभाविक भाषा हिंग्लिश ही होती है। जब आप भाषा नहीं जानते तो भाषा बनाते हैं, और जब बहुत बड़ी आबादी भाषा बनाने के काम में लगी हो, तब वह अच्छी-खासी हिंग्लिश बन जाती है।"[38] अभी हिंग्लिश का जितना प्रयोग बोलने में किया जा रहा है, उतना लिखने में नहीं हो रहा है। लिखना चाहें देवनागरी में हो या

रोमन अक्षरों में हिंग्लिश का प्रयोग बोलने की अपेक्षा लिखने में अभी कम है-"निश्चित रूप से, युवा, व्यापार, फैशन, सिनेमा आदि से जुड़ी खबरों में हिंग्लिश का अधिकाधिक इस्तेमाल होता है। हिंग्लिश कानों की आदत तो बन चुकी है, लेकिन आँखों को अभी भी यह चुभती है, खास तौर पर लंबी रपटों में। इसलिए प्रिन्ट यह खतरा पूरी तरह से नहीं उठा पाया है, क्योंकि सुनाना तो आसान है लेकिन पढ़ाना मुश्किल।"[39] लेकिन धीरे-धीरे आँखों को अटपटी लगने या खटकने वाली यह स्थिति में लगातार प्रयोग करते रहने के कारण दूर होती जाएगी। इस नई बन रही भाषा के पीछे की शक्ति इसे रोकने वाली शक्ति से कहीं अधिक बड़ी नजर आती है।

रेडियो चैनलों और विज्ञापनों की भाषा तो निश्चित रूप से हिंग्लिश हो गई है। लेकिन अभी तक साहित्यिक लेखन में यह चलन बहुत कम है। वैचारिक हिंदी लेखन में भी हिंग्लिश का प्रयोग अभी न के बराबर है। इसे अभी पॉपुलर कल्चर या भाषा मानकर इससे दूरी बनाई जा रही है। इस तरह हम समाज में एक साथ दो बड़े प्रकार की हिंदी देख सकते हैं। पहली हिंदी में अंग्रेजी के शब्दों को विदेशज शब्दों के रूप में स्वीकार कर चुकी हिंदी है तो दूसरी ओर अंग्रेजी के ज्यादा से ज्यादा शब्दों के साथ बोली-लिखी जाने वाली हिंदी है, जिसे हिंग्लिश कहा जाने लगा है- "निजी रेडियो चैनलों और विज्ञापन वगैरह में हिंग्लिश ने एक सहजता प्राप्त कर ली है। शहरी और उच्च-कस्बाई जीवन इनके निशाने पर हैं, क्योंकि वे खपत के इलाके हैं। रेडियो की तो ज्यादातर अंतर्वस्तु युवाओं को ध्यान में रख कर तैयार की जा रही है। विज्ञापन के साथ भी यह एक हद तक लागू होता है। साहित्यिक लेखन में हिंग्लिश का असर शायद सबसे कम है। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कुछ कहानियाँ और उपन्यास लिखे गए जिनमें हिंग्लिश के प्रयोगों की बहुतायत है, लेकिन इन्हें 'लोकप्रिय साहित्य' के रूप में देखा जाता है। बड़े पैमाने पर जो साहित्य लिखा जा रहा है, उनमें किरदार भले ही कभी-कभार हिंग्लिश का प्रयोग कर लेते हों, आख्यान में वह ज़्यादा नज़र नहीं आता। इस पृष्ठभूमि में नवभारत टाइम्स की भाषा काफी 'बोल्ड' लगती है, भले ही 'ब्यूटीफुल' न हो।"[40] इस सम्बन्ध में ही दो राय हो सकती हैं। कुछ लोगों को अंग्रेजी मिली हुई नवभारत टाइम्स की भाषा बोल्ड और ब्यूटीफुलदोनों लगती हैं। इसका प्रमाण इस अख़बार में लगातार इस नई तरह की भाषा का इस्तेमाल करते रहना ही है।

नवभारत टाइम्स अखबार की कुछ खबरों की भाषा का उदाहरण आप देखें। कभी-कभी तो कुछ खबरों में पचास प्रतिशत शब्द भी अंग्रेजी के प्रयुक्त होने लगे हैं- "7 अक्टूबर, 2013 को 'मेट्रो के पास इमरजेंसी लैंडिंग' शीर्षक से पहले पन्ने पर छपी खबर की भाषा देखिए :

गाजियाबाद के हिंडन एयरबेस से टू-सीटर प्लेन ने दिल्ली की तरफ उड़ान भरी लौटते वक्त पायलट को तकनीकी फॉल्ट का पता चला तो पार्क में इमरजेंसी लैंडिंग कराई। ... प्लेन इमरजेंसी लैंडिंग कर रहा रहा। लैंडिंग सेफ थी और दोनों पायलट भी सलामत थे, अचानक घोष को लगा कि प्लेन में टेक्निकल फॉल्ट है...।"[41]

"इस खबर का शीर्षक है, 'हैड, फुट एंड माउथ डिज़ीज़'। इसके कुछ वाक्यांश हैं :

घबराएँ नहीं, बस रहें एलर्ट

मानसून सीजन में वायरस रहता है ज्यादा एक्टिव, फैलती है बीमारी

बॉडी के अंदर फ्लूइड कम न होने दें

पैरेंट्स के नाम एडवाइजरी जारी

स्कूलों ने प्राइमरी सेक्शन को क्लोज कर दिया है

शरीर पर रैशेज हैं

सभी क्लासेज को क्लोज़ नहीं किया जा सकता

फॉगिंग करवाई जा रही है...।"[42]

"पृष्ठ 4 पर युवाओं और शिक्षा से जुड़ी खबर में लगभग 50 फीसदी शब्द अंग्रेजी के हैं:

फाउंडेशन कोर्स

25 मार्क्स प्रोजेक्ट के होंगे

ग्रुप के हर स्टूडेंट्स को बराबर नंबर

20 नंबर का सेमेस्टर एग्जाम

15 नंबर प्रेजेंटेशन के बेस पर

यह हाल युवाओं से जुड़ी लगभग हर खबर के साथ है।"[43]

कुछ और उदाहरण आप देखें- “आर्थिक मामलों से संबंधित खबरें एक नये किस्म की हिंग्लिश लेकर आ रही हैं। पृष्ठ 11 पर नयी दिल्ली से बाबर जैदी की खबर है, ‘फाइनेंशियल सेक्टर पर फोकस से लॉस’। पहला पैराग्राफ है : ‘इन्वेस्टमेंट में डायवर्सीफ़िकेशन सेफ़्टीनेट का काम करता है, लेकिन यह तभी असरदार होता है जब फोकस्ड नहीं हो।’”[44]

“इसी पन्ने पर मुंबई से शिल्पी सिन्हा की खबर की भाषा भी इसी तरह की है। ‘ नये बीमा नार्म्स से घटेगा एजेंट्स का कमीशन’ शीर्षक इस खबर में आगे लिखा गया है : ‘... ट्रेडिशनल प्रोडक्टस के लिए नये नार्म्स बनाए हैं, जिनका मकसद पॉलिसी होल्डर्स के लिए कॉस्ट घटाना, रिटर्न बढ़ाना, और मृत्यु होने की स्थिति में पेआउट बढ़ाना है। नये नार्म्स से इंश्योरेन्स कंपनियों को पॉलिसीज़ के डिसकंटीन्यूएशन से होने वाला बेनीफिट भी कम होगा।’”[45] इन उद्धरणों को पढ़ने से आप हिंग्लिश भाषा का बनता हुआ स्वरूप देख और पढ़ सकते हैं।

नवभारत टाइम्स की भाषा की विशेषता बताते हुए रोहित प्रकाश लिखते हैं कि धर्म-अध्यात्म की भाषा में अभी कोई बदलाव देखने में नहीं आ रहा है। और युवा वर्ग से जुड़ी खबरों की भाषा पूरी तरह से हिंग्लिश बनाई जा रही है-“यहाँ यह बात साफ कर देनी जरूरी है कि हमेशा राजनीति की अपेक्षा मनोरंजन, खेल और युवाओं पर आधारित खबरों की विस्तृत रिपोर्ट में अंग्रेजी के शब्द ज्यादा आते हैं, एक तथ्य यह भी है कि अंग्रेजी शब्दों की भरमार उन खबरों में ज्यादा होती है जिसमें थोड़ा ‘फन एलिमेंट’ होता है। अक्सर राजनीति भी उस कोटि में दाखिल हो जाती है। गंभीरता की भाषा हिन्दी हो जाती है। इसका एक उदाहरण यह है कि धर्म-अध्यात्म के पन्ने पर कोई छेड़छाड़ नहीं होती। ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के शब्द होते हैं।”[46] आम बोलचाल में हिंग्लिश का कैसा इस्तेमाल कई बार सुनने को मिलता है, उसका एक और मनोरंजक उदाहरण इस प्रकार है-“अरे यार, ‘लाइट’ की तो बहुत ‘प्रॉब्लम’ है हमारे ‘एरिए’ में, मैं तो ‘मंडे टेस्ट’ के लिए कुछ ‘रिवाइज़’ नहीं कर सका।’ ‘मेरे यहाँ तो कल ‘गैस्टों’ की ‘लाइन’ लगी रही। उनके ‘किड्स’ तो बहुत ही ‘नॉटी’ थे। ‘प्रिपेटरी लीव’ भी ‘वेस्ट’ हो गयी।’ ‘सुन मेघा, दिव्या की ‘डिनर पार्टी’ में सब ‘डिशिज’ इतनी ‘टेस्टी’ थी कि आई कांट टेल यू!’ ‘सर, आज का ‘पेपर’ तो इतना ‘टफ’ और ‘लैंदी’ था कि मैं तीन ‘क्वश्चंस’ तो ‘अटैम्पट’ ही नहीं कर सका। ‘मोस्टली स्टूडेंट्स’ का पेपर ‘इनकंपलीट’ ही रह गया।’ इन उदाहरणों को देने के बाद डॉ. रवि शर्मा इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऐसे वाक्य पब्लिक स्कूलों की देन हैं।”[47] बानवे शब्दों के संवाद में एक तिहाई शब्द अंग्रेजी के हैं। इसे हिंग्लिश का आदर्श उदाहरण मान सकते हैं। इस प्रकार की हिंदी शहरों के अंग्रेजी स्कूलों में पढ़े हुए युवा अक्सर बोलते हैं।

हिंदी भाषा में अग्रेजी के शब्दों के इस्तेमाल पर कई बार लोग भाषा की अशुद्धि का आरोप लगाते हैं तो कई बार कुछ विद्वान् इसे पहले से अरबी-फारसी शब्दों की तरह अंग्रेजी के शब्दों के प्रचलन के रूप में देखते हैं- “हिंग्लिश की पक्षधरता सिर्फ पाठक नहीं, बल्कि विशेषज्ञों का भी एक वर्ग कर रहा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में प्राध्यापक डॉ. मुकुल श्रीवास्तव लिखते हैं, ‘आज बात होती है कि आखिर हिन्दी में अंग्रेजी के शब्द क्यों प्रयोग हो रहे हैं? हो-हल्ला जोरों पर है। इससे हिन्दी के खत्म होने का डर क्यों सता रहा है? क्या इससे पहले उर्दू-फारसी आदि के शब्दों का प्रयोग नहीं होता रहा है? हम यही तो कहते हैं- ‘ये हमारी किस्मत में नहीं था’ क्या इस पर किसी ने ऐतराज किया? नहीं न? गौर से देखिए यहाँ किस्मत शब्द उर्दू ही तो है। क्या इससे हिन्दी को कोई नुकसान हुआ? हकीकत में यह नुकसान नहीं उसकी श्रीवृद्धि है।’”[48]

3 इडियट्स फिल्म में मुख्य रूप से हिंग्लिश भाषा का ही प्रयोग किया गया है। कुछ पात्रों में यह अधिक है तो कुछ पात्रों में कम है। आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण भी यह अंतर पहचाना जा सकता है। गरीब परिवार से आने वाले राजू की माता जी हिंदी का ही प्रयोग अधिक करती हैं। वही अमीर परिवार का चतुर रामालिंगम, सुहास और वीरू सहस्त्रबुद्धे, पिया आदि पात्र हिंग्लिश का प्रयोग ज्यादा करते हैं। लेकिन इंजीनियरिंग कॉलेज में काम करने वाला नौकर मनमोहन अपने आसपास के वातावरण के कारण हिंग्लिश का प्रयोग करता है-“मैं मन मोहन। एम एम। ये सब इंजिनियर्स मुझे मिलीमीटर बुलाते हैं। दूध, अंडा-ब्रैड, कपड़े धोना, इस्त्री करना, जरनल भरना, असाइन्मंट कॉपी करना, कोई भी काम है, बोलो। फिक्स्ड रेट है। नो बारगेन।”[49]

“दीज़ आइडियाज़ डोन्ट वर्क इन द रियल वर्ल्ड, छांछड़। तू तेरी ट्रेन पकड़, मैं मेरी ट्रेन पकड़ता हूँ। दस साल के बाद इसी स्टेशन पे वापस आयेंगे। आज ही के दिन। देखेंगे, कौन ज्यादा सकसैसफुल हूँ। तुम या मैं। हैं हिम्मत। हैं हिम्मत तो लगा बेट? बोल आयेगा? आयेगा? आयेगा?”[50]

“अरे राजू, हम लोग पढ़ेंगे। जी लगा के पढ़ेंगे। लेकिन सिर्फ इग्ज़ैम पास के लिए नहीं। किसी महापुरुष ने कहा है कि कामयाब होने के लिए नहीं, काबिल होने के लिए पढ़ो। सकसैस के पीछे मत भागो। एक्सीलैंस, एक्सीलैंस का पीछा करो। सकसैस झक मरके तुम्हारे पीछे आएगी।”[51]

“वीरू सहस्त्रबुद्धे की बात मानों और अपना कमरा चेंज करो। चतुर रामालिंगम के साथ शिफ्ट हो जाओ। इग्जैम आ रहे हैं। उस छांछड़ के साथ रहोगे तो कभी पास नहीं होगे।”[52]

"मेरे डैड सुहास के साथ ये इंगेज्मन्ट तोड़ने नहीं देंगे। आप इतना अच्छा एक्सप्लेन करते हैं, अगर आप उनको भी एक डेमो दे दें तो...।"[53]

जब से हिन्दी खड़ीबोली का उद्भव हुआ है तब से लेकर अब तक उसका रूप एक जैसा या स्थिर नहीं रहा है। संभवतः यह स्थिति दुनिया की सभी जीवंत भाषाओं के साथ कमोबेश लागू हो सकती है। भाषाओं की नित्य परिवर्तनशीलता ही उनको जीवंत बनाती है। कबीर ने भाषा को बहते नीर के रूप में शायद इसीलिए देखा होगा। हिन्दी भाषा ने भी अब तक न जाने कितने परिवर्तन देखे हैं। और वह आज भी बदल रही है। इस संबंध में डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है- "हिन्दी की लोकप्रियता और प्रसार का प्रमाण यह है कि वह अनेक रूपों में बोली जाती है, उसकी अनेक शैलियाँ और अनेक बोलियाँ हैं।"[54] कुछ ऐसी ही बात भाषा वैज्ञानिक डॉ रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ने कही है- "भाषा अपने व्यवहार में वैविध्यपूर्ण और विषमरूपी होती है।"[55] हिंग्लिश एक अलग भाषा और हिंदी को नष्ट करने वाली शैली न होकर एक प्रकार की हिंदी ही है। इससे अभूतपूर्व रूप से हिंगि में अंग्रेजी शब्दावली का आगमन हो रहा है। अनेक तत्सम, अरबी-फारसी मूल के शब्द अंग्रेजी शब्दों के कारण चलन से बाहर हो रहे हैं या कमजोर पड़ रहे हैं। इससे हिंदी की नई शैली का विकास हो रहा है। और हिंदी आने वाली समय में बिलकुल आज जैसी नहीं रहने वाली है। इस कारण यह है कि आज की हिंदी भी पचास साल बोली जाने वाली हिंदी से अलग हो रही है।

भारतेंदु के समय में प्रचलित हिंदी की बारह शैलियों का उन्होंने परिचय दिया है। इन शैलियों को पढ़कर यह जरूर समझा जा सकता है कि हिंदी शुरुआत से ही एकरूप भाषा नहीं रही है। भारतेन्दु ने अपने समय में प्रचलित हिन्दी गद्य की बारह शैलियों का परिचय देते हुए लिखा था-

"अथ लिखने की भाषा का उदाहरण–भाषा का तीसरा अंग लिखने की भाषा है और इसमें बड़ा झगड़ा है कोई कहता है कि उरदू शब्द मिलने चाहिए कोई कहता है कि संस्कृत शब्द होने चाहिए और अपनी अपनी रुचि के अनुसार सब लिखते हैं और इसके हेतु कोई भाषा अभी निश्चित नहीं हो सकती।" इन सब भाषाओं के नीचे उदाहरण दिखाते हैं।

वर्षावर्णन।

नं. १ - जिसमें संस्कृत के शब्द बहुत हैं

अहा पर कैसी अपूर्व और विचित्र वर्षा ऋतु सांप्रत प्राप्त हुई है और अनवत्ते आकाश मेघाच्छन रहता है और चतुर्दिक कुझझटिका पात से नेत्र की गति स्तंभित हो गई यही प्रतिक्षण अभ्र में चंचला पुंश्चली स्त्री की भांति नर्तन करती है और वैसे ही बकावली उडडोयमाना होकर इतस्ततः भ्रमण कर रही है मयूरादि अनेक पक्षिगण प्रफुल्लित चित से रव कर रहे हैं और वैसे ही दर्दगण भी पंकाभिषेक करके कुकवियों की भांति कर्णविधक ढक्का झंकार सा भयानक शब्द करते हैं।

नं. २ जिसमें संस्कृत के शब्द थोड़े हैं

सब विदेशी लोग घर फिर आये और व्यापारियों ने नौका लादना छोड़ दिया पुल टूट गये बांध खुल गये पंक से पृथ्वी भर गई। पहाड़ी नदियों ने अपने बल दिखाये बृक्ष कूल समेत तोड़ गिराए सर्प बिलों से बाहर निकले महानदियों ने मर्यादा भंग कर दी और स्वतंत्रता स्त्रियों की भांति उमड़ चली।

नं. ३ जो शुद्ध हिन्दी है

पर मेरे प्रीतम अब तक घर न आए क्या उस देश में बरसात नहीं होती या किसी सौत के फेर में पड़ गये कि इधर की सुध ही भूल गये। कहां तो वह प्यार की बातैं कहां एक संग ऐसा भूल जाना कि चिट्ठी भी न भिजवाना। हा! मैं कहां जाऊं कैसी करूँ मेरी तो ऐसी कोई मुंहबोली सहेली कि उससे दुखड़ा रो सुनाऊं कुछ इधर उधर की बातों ही से जी बहलाऊं।

नं. ४ जिसमें किसी भाषा के शब्द मिलने का नेम नहीं है।

ऐसी तो अंधेरी रात उसमें अकेली रहना कोई हाल पूछने वाला भी पास नहीं रह रह कर जी घबड़ाता है कोई खबर लेने भी नहीं आता और न कोई इस विपत्ति में सहाय होकर जान बचाता।

नं. ५ जिसमें फारसी शब्द विशेष हैं।

खुदा इस आफत से जी बचाये प्यारे का मुंह जल्द दिखाए कि जान में जान आए। फिर वहीं ऐश की घड़ियां आए शबोरोज दिलवर की मुहबत रहे। रंजोगम दूर हो दिल मसरूर हो।

कलकत्ते की शोभा

नं. ६ जिसमें अंगरेजी शब्द हिन्दी के ही मिल गये हैं।

वहाँ हौसों में हज़ारों बक्स माल रखे हैं-कंपनियों के सैकड़ों बक्स इधर से उधर कुली लोग लिए फिरते हैं लालटेन में गिलास चारों तरफ बल रहे हैं सड़क की लैन सीधी और चौड़ी है पालकी गाड़ी बग्गी चिरिट फिटिन दौड़ रही हैं रेलवे के स्टेशनों पर टिकट बंट

रहा है कोई फर्स्ट क्लास में बैठता है कोई सेकेंड में कोई थर्ड में बैठता है ट्रेन को इंजिन इधर से उधर खींच कर ले जाती है और बड़े-छोटे तक उहदेदार जज मजिस्टर कलकटर पोस्ट मास्टर पिटी साहब स्टेशन मास्टर करनैल जरनैल कमानियर किरानी और कांस्टेबल वगैरह चारों ओर घूम रहे हैं कोई कोट पहिने है कोई बूट पहिने है कोई पाकेट में लोट भरे हैं लाट साहिब भी इधर उधर आते जाते हैं डाक दौड़ती है बोट तिरते हैं पादरी लोग गिरजों में किसानों को बैविल सुनाते हैं पंप में पानी दौड़ता है कंप में लंप रौशन हो रही है।

नं. ७ जिसमें पुरबियों की बोली बा काशी की देशभाषा है।

क साहेब आप कब्बों कलकत्ता गये हो कि नाहीं? जो न गये हो तो एक बेर हमरे कहे से आप ऊ शहर जरूर देखों देख ही के लायक है आपसे हम ओकी तारीफ का करी आपनी आंखी से देखे बिना ओका मजै नहीं मिलता आप तौ बहुत परदेस जाथौ एक बार ओहरो झुक पड़ो।

नं. ८ जो काशी के अर्धशिक्षित बोलते हैं।

महाराज मैं सच कहता हौं कलकत्ता देखने ही के योग्य है आप देखियेगा तो खुस हो जायेगा हम एक दफे गये रहे से ऐसा जी प्रसन्न हो गया कि क्या पूछना है।

नं. ९ दक्षिण के लोगों की हिन्दी।

सो तो ठीक है कलकत्ते तो आपके एक बेर अवश्य जाना हमारे कूं तो ऐसा जान पड़ता है कि जावत पृथ्वी तल में दूसरा ऐसा कोई नगर ही नहीं है।

नं. १० बंगालियों की हिन्दी।

सच है उधर बाजार का बड़ा बड़ा दोकान है उधर मछुआ बाजार में बहुत अच्छा अच्छा सामान है कहीं गाड़ी खड़ा है कहीं केली फला है कहीं गोरा की समाज आती है कहीं अमारा देश का बंगाली बाबू लोगों का पल्टन जाती है के कोम्पानी लोग दिवालिया होया जाता है कहीं मारवाड़ी माल लेकर घर पराता है।

नं. ११ अंग्रेजी ('अंग्रेजों' होना चाहिए) की हिन्दी।

बेशक इसमें कोई शक नहीं है कैलकटा देखने की जगह है हम वहां अकसर रहता आप एक बार जाने मांगो वहां जाकर थोड़ा सबुर करो देखो बहुत लोग जाता तो आप घर में पड़ा-पड़ा क्यों सड़ता जाओ हमारा कहने से जाओ।

नं. १२ रेलवे की भाषा। ईस्टइंडिया रेलवे। इश्तहार–(इसमें दो इश्तहार दिये हैं जिनमें से एक उद्धृत किया जाता है)

कजरा स्टेशन में एक मिसत्री जिसका नाम वसी था एक चारपाई नेआ सिलिपर के चोरा कर के बनवाने के वास्ते अगस्त सन् १८८३ ई० साल में गिरफ्तार कीया गेया था और मजिस्ट्रेट साहब ने उसको मोजरिम ठहरा कर एक बरस के वास्ते सख्त मेहनत के साथ कैद किया।

हम इस स्थान पर वाद नहीं किया चाहते कि कौन भाषा उत्तम है और वही लिखनी चाहिए पर हां मुझे से कोई अनुमति पूछे तो मैं यह कहूँगा कि नंबर २ और तीन लिखने योग्य हैं।"[56] इन सभी प्रकार की हिंदी शैलियों के अलावा भी न जाने कितनी प्रकार की हिंदी की शैलियाँ उस समय प्रचलित रही होंगी। आज भी कमोबेश कहा जा सकता है कि हिंदी की अनेक शैलियों में से एक शैली हिंग्लिश भी है। वर्तमान समय में हिंदी के बारे में बात करते हुए इस नई शैली को नजरअंदाज करना मुश्किल है। इस शैली को एक नई भाषा भी अभी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इसका व्याकरण, शब्दावली या लिपि (यह अंतर वैकल्पिक है) का अंतर नहीं सामने आए। फिर भी इस दिशा में हिंग्लिश का विकास जरूर हो रहा है। वह देवनागरी के साथ-साथ रोमन में भी लिखी जा रही है। इसका संकेत ऊपर किया जा चुका है। लेकिन कुछ उपन्यास भी देखने को मिले हैं जो रोमन लिपि में और हिंग्लिश शैली की हिंदी या कहें हिंग्लिश में लिखे गए हैं। स्वप्ना राजपूत का उपन्यास 'The Beautiful Roses' हिंग्लिश की पहली किताब होने का दावा करता है। 'India's first HINGLISH book (Hindi Language English Script)।"[57] 2014 में प्रकाशित इस उपन्यास का एक अनुच्छेद दिया जा रहा है-AASHIRWAAD: Raghav aur Smita ki kahani (RAGMITA): Diwali ka tyohaar nazdeek aa raha tha, Hydrabad ke rehnevale Verma parivar ke sadasya bhi diwali ke tayyariyon mein lage the. Uss din subah, Sujata apne pati Ravikumar Verma aur dono bête Raghav aur Ram ke daftar jaane ke baad ghar ke kaam khatm kar, diwali ki khareedariyan karne apne gadi mein bazaar ke liye nikli."[58]

यह लिपि और शैली अभी अपने शुरुआती दौर में है। इसे अभी अपना रूप निर्मित करने में कुछ वक्त लगेगा। फिर हिंदी बोलने-लिखने और पढ़ने वाले समाज में इस नई शैली को लेकर विचार होना जरूर चाहिए। आगे की हिंदी पर इस शैली का बड़ा असर पड़ सकता है, इसलिए हिंदी समाज को इस शैली के बारे में गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

---

[1] 3 idiots, The original screen play, Om Books International, 2018, pp 40

[2] Srivastava, R.,N., Bi/Multilingualism, Studies in Language and Linguistics Vol.3, Kalinga Publication, Delhi, 1994, pp 102

[3] "हिन्दी और अंग्रेजी (तथा अन्य भारतीय भाषाओं) के बीच संकेत-परिवर्तन और संकेत-मिश्रण का इतिहास बहुत लंबा है और इसका एक सिरा औपनिवेशिक युग तक पहुँचता है और अन्य भारतीय भाषाओं के समान विदेशज अंग्रेजी शब्दों को समाहित करने का हिन्दी का इतिहास भी बहुत पुराना है।" प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 518

[4] **Definition of *code-switching*:** the switching from the linguistic system of one language or dialect to that of another "Code-switching." *Merriam-Webster.com Dictionary*, Merriam-Webster, https://www.merriam-webster.com/dictionary/code-switching. Accessed 10 Oct. 2021

[5] प्रकाश रोहित, प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 560

[6] शुक्ल, रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2001, पृष्ठ संख्या 32

[7] वही, शुक्ल, 251

[8] वही शुक्ल, 257

[9] वही, शुक्ल, 258

[10] **a mixture of the languages Hindi and English, especially the type of English usedby speakers of Hindi** https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/hinglish. Accessed 10 Oct. 2021

[11] प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 517

[12] वही

[13] मित्र पंकज, क्विज मास्टर, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ : (2000-2010), संपादक कमला प्रसाद, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि., प्रथम संस्करण 2010, पृष्ठ 16

[14] नीरजा, गुरमकोंडा, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015, 199-201

[15] प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या, 518

[16] "दरअसल 26 सितंबर, 2011 के सरकारी परिपत्र में नौकरशाहों और किरानियों को अपनी फाइल 'सरल हिन्दी' यानी संस्कृतनिष्ठ की जगह चालू अंग्रेजी शब्दों से युक्त हिन्दी में लिखने को कहा गया। इस पर विवाद हुआ लेकिन इससे यह भी जाहिर हुआ कि एक आधिकारिक बाधा हटा ली गई है।" प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 518

[17] वही, 521

[18] वही, 525

[19] वही, 568

[20] वही, 525

[21] https://www.netflix.com/watch/70121522?trackId=14170286&tctx=3%2C2%2C5bee407b-815a-4399-8e94-04192b68d736-226811458%2Cf25f186e-9f7e-4df4-bd32-60c485a9d0e8_43708262X3XX1634916957567%2Cf25f186e-9f7e-4df4-bd32-60c485a9d0e8_ROOT%2C 23 October 2021 accessed on

[22] प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 530

[23] वही, 533

[24] वही, 540

[25] वही, 541

[26] वही, 542

[27] वही, 543
[28] वही, 543
[29] वही, 543
[30] “हमने यह भी मान लिया कि यह बँगला से हिंदी में अनुवाद की कृपा का फल है! तो इससे बुरा क्या हुआ? न तो अनुवाद करना वैसा बुरा है, जैसा आप ‘कृपा’ से ध्वनित कर रहे हैं और न प्रयोग-वैचित्र्य आ जाना ही बुरा है। मराठी का सम्पर्क आप को अखरता क्यों है? अभी तो हमारी भाषा भारत की ही अपनी सगी बहनों से मिल रही है; आगे इसे बाहर भी जाना है। कहीं से कोई अच्छी बात सीख ली जाय तो बुरा क्या है?”[30] वाजपेयी, किशोरीदास, अच्छी हिंदी का नमूना, जनवाणी प्रेस एंड पब्लिकेशंस लि., कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९४८, १७२-१७३
[31] प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 544
[32] वही, 548
[33] वही, 546
[34] वही, 554
[35] “मैंने हिंग्लिस की इस परिघटना का विश्लेषण करने के लिए राष्ट्रीय दैनिक अख़बार नवभारत टाइम्स पर ध्यान केन्द्रित किया है। हिंदी में दर्जन भर राष्ट्रीय स्तर के अख़बार निकलते हैं, लेकिन इसे हम हिंग्लिश का प्रतिनिधि अख़बार कह सकते हैं।” प्रतिमान, संपादक आदित्य निगम, रविकांत, राकेश पाण्डेय, जुलाई-दिसंबर 2015, पृष्ठ संख्या 560-61
[36] वही, 561
[37] वही, 561
[38] वही, 561
[39] वही, 565
[40] वही, 566
[41] वही, 566
[42] वही, 566
[43] वही, 566-67
[44] वही, 567
[45] वही, 567
[46] वही, 568
[47] वही, 572
[48] वही, 575
[49] 3 idiots, The Original Screenplay, Om Books International, India, First published in 2010, pp 38
[50] वही, 123
[51] वही, 106
[52] वही, 103
[53] वही, 97
[54] शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1975, पृष्ठ 270
[55] श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, हिन्दी भाषा का समाजशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण 1994, पृष्ठ संख्या 34
[56] भारतेन्दु समग्र सम्पादन: हेमंत शर्मा, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1987, पृष्ठ संख्या 1050-51
[57] Rajput Swapna, Quills Ink Publishing www.quillsink.com, 2014
[58] वही, पृष्ठ संख्या, 1